यूहन्ना की पत्रियाँ

पुनर्कथित,
व्याख्यायित,
आज के लिए।

GOOD NEWS

यूहन्ना की पत्रियाँ

पुनर्कथित, व्याख्यायित, आज के लिए।

Hans-Jörg Ronsdorf

क्योंकि मैं जीवित हूँ, तुम भी जीवित रहोगे।

यूहन्ना 14:19

यूहन्ना की पत्रियों को अपने शब्दों में फिर से कहा गया है, अर्थात् व्याख्या के साथ प्रस्तुत किया गया है। पाठ की लंबाई किसी पारंपरिक बाइबल-अनुवाद के मूल बाइबल-पाठ से लगभग तीन गुना है।

पहला संस्करण जून 2020

© Hans-Jörg Ronsdorf – सर्वाधिकार सुरक्षित

www.hans-joerg-ronsdorf.de

Albis 6 ½

87477 Sulzberg

hj-ronsdorf@t-online.de

जर्मन संस्करण का ISBN 978-3-9820715-4-1

आवरण-सज्जा: टोबियास श्ट्रिकर (Tobias Stricker)

बाइबल क्यों पढ़ें?

यह छोटी-सी पुस्तिका आपके हाथों तक पहुँच गई है। इसमें एक लंबी और दो छोटी पत्रियों की बात है, जिन्हें यूहन्ना नाम के एक व्यक्ति ने लिखा। लगभग 2000 वर्ष पहले। क्या प्राचीन काल का ऐसा पाठ आज भी कोई महत्व रख सकता है? निश्चय ही, क्योंकि लेखक ने कुछ विशेष अनुभव किया था: वह नासरत के यीशु को जानता था। उसने उसे व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया था। यही बात उसकी पत्री को एक अद्वितीय मूल्य देती है। इसीलिए उसे लगभग आरंभ से ही उन लेखों के संग्रह में शामिल किया गया, जिसे आज हम नया नियम के नाम से जानते हैं।

क्या आप परमेश्वर को जानना चाहते हैं? क्या परमेश्वर के विषय में सत्य आपके लिए महत्वपूर्ण है? परमेश्वर को सचमुच जानना – यही यूहन्ना रचित सुसमाचार और इन पत्रियों, दोनों का प्रमुख विषय है।

मानवीय मापदंडों में कहें तो यूहन्ना की यह पत्री सीमाओं को लाँघ जाती है। ऐसी सीमाएँ, जिन्हें कोई नहीं लाँघ सकता, जब तक उसे दूसरी ओर से जानकारी न मिली हो। यह पत्री सबसे निर्मल झील, सबसे ऊँचे पर्वत, सबसे सुंदर फूल, सबसे शानदार सिंह, सबसे सुंदर चित्र के समान है। कोई भी साहित्यिक उत्कृष्ट कृति इस पत्री के आसपास भी नहीं आती, दूर-दूर तक भी नहीं। न सुकरात (Sokrates), न प्लेटो (Plato), न ज़ेनोफ़ोन (Xenophon), कोई नहीं। यह पत्री परमेश्वर के प्रेम की आतिशबाज़ी है। और उसकी पवित्रता की भी।

धर्मविज्ञानी आज अपने सर्वोत्तम शोध-कार्यों के द्वारा जो कुछ भी अनुमान लगाएँ, जो भी सिद्धांत गढ़ें और जोड़ें: यह पत्री उससे विचलित नहीं होती। यदि यह पत्री हमारे पास न होती, तो नए नियम में एक आवश्यक आधार-शिला की कमी रह जाती। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यह पत्री हमारे पास है!

यह पत्री आज के लिए कितनी सामयिक और प्रासंगिक है?

पहली सदी के मसीहियों के विचार और अनुभव आज के विश्वासियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। आख़िरकार वे भी ऐसे लोग थे जो अपने जटिल और बहुलवादी समाजों में विश्वासयोग्यता से जीने का प्रयास करते थे। तब भी और आज भी यह ठीक-ठीक जानना हमेशा आसान नहीं है कि विश्वासयोग्यता से कैसे जिया जाए। ये आरंभिक मसीही हमारे आदर्श बन सकते हैं।

एक ऐसे संसार में, जो पहले से ही परस्पर विरोधी धर्मों और दर्शनों से भरा हुआ था और इस तरह हमारे अपने संसार जैसा था, यीशु ने कहा: “अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें” (यूहन्ना 17:3)। यीशु अनन्त जीवन को परमेश्वर का ज्ञान (परमेश्वर को पहचानना) बताता है। क्योंकि केवल मानवजाति के प्रति परमेश्वर के आत्म-प्रकाशन को दिए गए हमारे उत्तर के द्वारा ही हम में से हर कोई उसे जान सकता है। और फिर उसके साथ जीवन आरंभ कर सकता है। उसका आनंद ले सकता है। अभी और अनन्तकाल तक। यह इतिहास के हर स्थान पर हर मनुष्य के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है। और इस पत्री का विषय भी!

पत्री की पृष्ठभूमि और उसके लिखे जाने का कारण

हर पाठक को यह आभास हो सकता है कि ये पत्रियाँ फूट और उलझन के समय में लिखी गईं। ऐसी फूट और उलझन, जो विशेष रूप से पाने वालों के उस समूह में उभरी थी जिसे “यूहन्ना का समुदाय” कहा जाता है। फिर भी हम झूठी शिक्षाओं और भटकावों को फिर से गढ़ने का कोई ठोस प्रयास नहीं करते – यह काम पहले भी पर्याप्त किया गया है और आज भी किया जा रहा है। पत्रियों में प्रस्तुत सत्य मसीह के विषय में अनेक झूठी शिक्षाओं के विरुद्ध बोल सकते हैं और उनके विरुद्ध प्रयोग किए जा सकते हैं। ये झूठी शिक्षाएँ ज्ञानवाद (ग्नॉस्टिसिज़्म), आभासवाद (डोसेटिज़्म) या केरिन्थुस (Kerinthus) की शिक्षा के रूपों में मौजूद थीं। झूठी शिक्षा को इतनी सटीकता से फिर से गढ़ने के लिए पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं। इसलिए इससे दूर रहना ही सबसे बुद्धिमानी लगता है। **ये पत्रियाँ अनेक झूठी धारणाओं को संबोधित करती हैं, जिनमें से बहुत-सी आज भी हमारे बीच मौजूद हैं।**

जिस परिस्थिति में यह पत्री भेजी गई थी, उसे देखते हुए इसके तीन विषय विशेष रूप से उभरकर सामने आते हैं:

ख्रीस्तशास्त्र – यीशु कौन है और यह क्यों महत्वपूर्ण है

यीशु को ईश्वरीय, देह में आए मसीह और परमेश्वर के पुत्र के रूप में मान लेना इन पत्रियों का केंद्र है। ख्रीस्तशास्त्र (क्रिस्टोलॉजी) वह शिक्षा है जो बताती है कि यीशु कौन है। आरंभ से ही चेलों के लिए यह स्पष्ट था कि यीशु के विषय में सत्य अछूता था और उसे छोड़ा नहीं जा सकता था। यीशु के विषय में एक झूठी शिक्षा से पूरा मसीही विश्वास ढह जाता। यीशु के सच्चे मनुष्यत्व का इनकार, मनुष्य यीशु के और उसके उद्धार देने वाले दुःख के उद्धार-संबंधी अर्थ का इनकार होता।

जो झूठे शिक्षक और भटकाने वाले इन्हीं मसीहियों के बीच से निकले थे, वे ठीक-ठीक क्या फैलाते थे, इस विषय में हम केवल अनुमान लगा सकते हैं। दूसरी सदी की एक परंपरा, जिसका वर्णन इरेनियस (Irenäus) करता है, बताती है कि कलीसिया के अगुवों ने केरिन्थुस नाम के एक व्यक्ति का विरोध किया, जो मानवीय यीशु और आत्मिक मसीह के बीच तीखा भेद करने का समर्थक था। केरिन्थुस मानता था कि यीशु एक उत्तम और बुद्धिमान शिक्षक था, पर उससे अधिक कुछ नहीं। इसके विपरीत मसीह एक आत्मिक सत्ता था, जो बपतिस्मे के समय मनुष्य यीशु पर उतरा और क्रूस पर उसकी मृत्यु से पहले उसे फिर छोड़ गया (देखें 5:6-8)।

दूसरी सदी का एक और मसीही, इग्नेशियस (Ignatius), विश्वासियों को एक “आभासवादी” ख्रीस्तशास्त्र से सावधान करता है। आभासवाद शब्द यूनानी शब्द dokeô से आया है, जिसका अर्थ है “प्रतीत होना”। आभासवादी सिखाते थे कि यीशु केवल मनुष्य “दिखाई देता” या “प्रतीत होता” था, और केवल दुःख उठाता और मरता हुआ “प्रतीत होता” था। फिर एक और, कुछ बाद का आंदोलन था, जिसने मसीही विश्वास को चुनौती दी: ज्ञानवाद। शायद यह पत्री इन तीनों धाराओं के विरुद्ध, उनकी सबसे आरंभिक अवस्थाओं में, लिखी गई है।

परमेश्वर का प्रेम, परमेश्वर से प्रेम और पड़ोसी से प्रेम

एक और बड़ा, बल्कि शायद सबसे बड़ा विषय ईश्वरीय प्रेम है, “agape”। यह विषय यूहन्ना के ख्रीस्तशास्त्रीय उद्देश्य के साथ अटूट रूप से गुँथा हुआ है।

लेखक हमें याद दिलाता है कि यीशु की इस आज्ञा का पालन करना कि हम एक दूसरे से प्रेम करें, केंद्रीय महत्व रखता है – इस पर कोई मोल-भाव नहीं हो सकता। प्रेम ही सत्य की और परमेश्वर से मिले सच्चे जीवन की कसौटी है।

द्वैत – दो भागों में बँटा दृष्टिकोण

जो इन पत्रियों को ध्यान से अपने भीतर उतारता है, उसका सामना बार-बार विरोधाभासों से होता है। यूहन्ना का दृष्टिकोण मूल रूप से एक द्वैत से बना है: ज्योति और अन्धकार, सत्य और असत्य, जीवन और मृत्यु, प्रेम और घृणा, ... वह (या यह) संसार उसके विरुद्ध जो "'संसार' का नहीं है"। यूहन्ना के अनुभव का संसार सीधे-सीधे दो अलग-अलग खेमों में बँटा है। एक ओर परमेश्वर, यीशु (परमेश्वर का प्रतिनिधि), आत्मा और परमेश्वर की सन्तान हैं। दूसरी ओर वह खेमा है जो परमेश्वर के विरुद्ध खड़ा है। इन विरोधियों में शैतान और उसकी सन्तान (1 यूहन्ना 3:8), मसीह-विरोधी – एक या अनेक – (2:18, 22; 4:3; 2 यूहन्ना 7), मसीह-विरोधी की आत्मा (1 यूहन्ना 4:3) और वह संसार शामिल हैं जो दुष्ट के प्रभाव में आ गया है। यूहन्ना के लिए यह पहचानना आसान है कि किसी व्यक्ति की निष्ठा कहाँ है। मनुष्य के काम बहुत कुछ कह देते हैं, जैसा 1 यूहन्ना 3:10 दिखाता है: "परमेश्वर की सन्तान और शैतान की सन्तान इस रीति से प्रकट होती हैं: वे सब जो सही काम नहीं करते, परमेश्वर से नहीं हैं, और न वे जो अपने भाइयों और बहनों से प्रेम नहीं करते।"

इस प्रकार यूहन्ना की अभिव्यक्ति और विश्वदृष्टि में कोई धूसर क्षेत्र नहीं है। काला या सफ़ेद, जैसा हम आज कहेंगे। लगभग एक डिजिटल दृष्टिकोण। हमें यह अटपटा लगता है। पर जब हम यूहन्ना को समझने का प्रयास करते हैं, तो उसका तरीका आज हमारे लिए भी कई प्रकार से सहायक है।

अक्सर सुनी जाने वाली और समझ में आने वाली एक प्रतिक्रिया यह रही है कि जो बात यूहन्ना के लिए इतनी महत्वपूर्ण है, उसे पूरा करना शायद ही संभव है। सक्रिय, निःस्वार्थ प्रेम उसकी सूची में पहले स्थान पर है। बिना किसी अगर-मगर के। मोल-भाव से परे। कोई ऐसा प्रेम कैसे कर सकता है? और पाप कैसे न करे? यूहन्ना के मापदंड ऊँचे हैं। वास्तव में पहुँच से बाहर। जो उन्हें 100 % पूरा नहीं करता, वह बाहर है। हाँ, यह कठोर प्रस्तुति हमें असमंजस में डाल सकती है। क्योंकि हमारा जीवन सिद्ध नहीं है। पूरी तरह निष्पाप नहीं है। यूहन्ना यह जानता है। यद्यपि वह कहता है कि जो परमेश्वर से जन्मा है वह पाप नहीं करता (3:6; 5:18), फिर भी वह भली-भाँति जानता है कि हम अभी भी पाप करते हैं (2:1)। यूहन्ना की सोच में यह कोई विरोधाभास नहीं है, और हमारे लिए भी इसका विरोधाभास होना आवश्यक नहीं।

लेखक कौन है?

यद्यपि परंपरा से इन लेखों को यूहन्ना नाम के किसी व्यक्ति से जोड़ा जाता है, फिर भी हमारे पास कोई आंतरिक प्रमाण नहीं है जो इस परंपरा की पुष्टि करे। **वास्तव में तीनों लेख अनाम हैं।** बिना नमस्कार और संबोधन के यूहन्ना सीधे अपने तर्क में उतर आता है; 2 और 3 यूहन्ना पुराने, जाने-पहचाने पत्र-रूप का पालन करती हैं और भेजने वाले को केवल “प्राचीन” बताती हैं, कोई व्यक्तिगत नाम लिए बिना। संभवतः यह वही लेखक है जिसने यूहन्ना रचित सुसमाचार और प्रकाशितवाक्य भी लिखा। यद्यपि बहुत कुछ इस बात के पक्ष में है कि वह यीशु का चेला, अर्थात् बारहों में से एक था, फिर भी हो सकता है कि वह कोई दूसरा यूहन्ना रहा हो। अर्थात् उसी नाम का कोई व्यक्ति, जो प्रभु का चेला भी था। शायद उन 70 में से एक।

पत्री की संरचना और उद्देश्य

संभवतः यह पाठ मूल रूप से लेखक की कलीसिया में एक प्रवचन के रूप में प्रयोग हुआ और फिर आसपास की दूसरी कलीसियाओं में बाँटा गया। इसे इस उद्देश्य से लिखा गया कि सुनने वाले यूहन्ना की उस परंपरा को थामे रहें जिसकी नींव यूहन्ना रचित सुसमाचार में रखी गई है – कि उनकी यह दृढ़ता सुरक्षित रहे, मज़बूत हो, या उन्हें इसके लिए प्रेरित किया जाए।

धर्मविज्ञानियों का अनुमान है कि इस पत्री को “एपिडिक्टिक (प्रशंसात्मक) वक्तृत्व” माना जा सकता है। भाषण की एक विधा, जिसका उद्देश्य श्रोताओं को उन मूल्यों पर और दृढ़ करना है जिन्हें वे पहले से मानते हैं। क्रूज़ (Kruse) का विचार ज्ञानवर्धक है: “इन सब का निष्कर्ष यह है कि हमें 1 यूहन्ना को उसके तर्क का सूत्र पहचानने का प्रयास किए बिना पढ़ना चाहिए, जैसा हम पौलुस की किसी पत्री में करते। वह कुछ भी सिद्ध करने का प्रयास नहीं करता; इसके विपरीत, वह झूठे शिक्षकों की शिक्षाओं और आचरण से उत्पन्न ख़तरे के सामने पाठकों को दृढ़ करने का प्रयास करता है, ताकि वे मसीही समुदाय के पारंपरिक सत्यों को थामे रहें।”

मैंने यह पत्री कई बार पढ़ी है और मुझे इसमें कोई संरचना, कोई रेखा या तर्क का कोई सूत्र ढूँढ़ने में हमेशा कठिनाई हुई है। इसकी संरचना को ठीक-ठीक बताना उतना ही कठिन है जितना इसकी विधा, अर्थात् इसकी साहित्यिक शैली को। कोई स्पष्ट समग्र रूपरेखा नहीं है। एक कसी हुई संरचना खोजने के प्रयास सामान्यतः कृत्रिम और अविश्वसनीय सिद्ध होते हैं। **कुछ लोग संरचना को समझाने के लिए एक सर्पिल (स्पाइरल) के चित्र का सहारा लेते हैं। विचार सीधी रेखा में कम और चक्र में अधिक चलते हैं।** लेखक बार-बार उन्हीं आपस में गुँथे हुए विषयों पर लौटता है – पाप, प्रेम और सही ख्रीस्तशास्त्र – और बाक़ी दो के विषय में जो कहा गया है, उसके प्रकाश में उन्हें लगातार आगे विकसित करता है।

एक रूपरेखा कुछ इस प्रकार हो सकती है:

	चक्र I	चक्र II	चक्र III
	1:1 – 2:28	**2:29 – 4:6**	**4:7 – 5:21**
प्रकाशन	परमेश्वर के जीवन का प्रकाशन (तुलना करें 1:2)	परमेश्वर के पुत्र और परमेश्वर की सन्तान का प्रकाशन (तुलना करें 3:2, 5)	परमेश्वर के प्रेम का प्रकाशन (तुलना करें 4:9)
कसौटियाँ	परमेश्वर के साथ सहभागिता का दावा, जिसकी परख होती है क) धार्मिक चाल-चलन से (1:5 - 2:6) ख) सच्चे प्रेम से (2:7-17) ग) सही शिक्षा से (2:18-28)	परमेश्वर की सन्तान होने का दावा, जिसकी परख होती है क) धार्मिक चाल-चलन से (2:29 – 3:10) ख) सच्चे प्रेम से (3:11-24) ग) सही शिक्षा से (4:1-6)	ईश्वरीय जीवन और प्रेम प्रमाणित होते हैं क) प्रेम (4:7-21), ख) आज्ञाकारिता (5:1-5) और ग) विश्वास के द्वारा, जो परमेश्वर की सन्तान में दिखते हैं (5:6-21)
जिस बाधा पर जय पानी है: संसार	संसार अपने आकर्षण से हमें पिता के हृदय से दूर खींचने का प्रयास करता है। (2:15-17)	संसार और परमेश्वर की सन्तान के प्रति उसकी घृणा (3:13-15)	संसार परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना कठिन बना देता है (5:3-5)
चेतावनी	झूठे मसीहों से चेतावनी (2:18-29)	झूठी आत्माओं से चेतावनी (4:1-6)	झूठे देवताओं से चेतावनी (5:18-21)

रूपरेखा: आलोइस वाग्नर (Alois Wagner)

यूहन्ना की पहली पत्री

यीशु, वचन, के विषय में प्रेरितों की गवाही: पिता से आया और उसके पास ले जाता है 1:1–4

जब यीशु ने हम बारहों को अपने चेले होने के लिए बुलाया, तब कुछ बिलकुल नया आरंभ हुआ। हमने उसे सुना, देखा और छुआ। सच्चे जीवन का आरंभ। जैसा परमेश्वर ने हमारे लिए सोचा था। किसी ऐसी बात का आरंभ, जिसने सब कुछ बदल दिया। और जो कभी समाप्त नहीं होती। बात यीशु की है, जो वचन है, लोगोस (LOGOS)। उसने सच्चे जीवन पर से पर्दा हटाया। हमारे लिए।

जो कुछ आरंभ से हुआ, हम उसकी गवाही देते हैं और उसका वर्णन करते हैं। जो हमने उससे, जीवन के वचन से, सुना है। वे केवल शब्दों से कहीं बढ़कर थे। उस जीवन को देखा और सराहा जा सकता था – हाँ, छुआ और गले लगाया जा सकता था। वह हमारे जैसा एक **मनुष्य** था, जिसके पीछे हम तीन वर्ष तक चले। हमने उसे बिलकुल पास से अनुभव किया। हम गवाह हैं और तुम्हें यह सुनाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं: वह पिता की ओर से आया।

परमेश्वर का जीवन, उसका अपना निज, अनन्त अस्तित्व, नासरत के निर्माण-कारीगर यीशु में होकर हमारे पास आया है। हम प्रेरितों ने, और दूसरे बहुतों ने भी, इसे देखा है। हम गवाह हैं, जो तुम्हें यह महान समाचार सुनाते हैं। वह, पुत्र, जो साक्षात् अनन्त जीवन है, परमेश्वर की ओर से आया। उसने स्वयं हमें बार-बार बताया कि वह स्वर्गीय पिता की ओर से भेजा गया है। पिता चाहता था कि उसका पुत्र हमारे पास आए। वह, जो परमेश्वर के इस महिमामय, प्रचुर, अनन्त जीवन को अपने भीतर लिए हुए है। इसलिए पुत्र मनुष्य बना। यही एकमात्र मार्ग है, जिससे ईश्वरीय जीवन हम तक पहुँच सकता है। ताकि वह हमारा जीवन बन जाए। सब मनुष्यों को जीवन के इस दान की बहुत आवश्यकता है। हम मृत्यु के वश में हैं। यह बात तुम्हारे बीच उन सब को भी जाननी चाहिए जो इनकार करते हैं कि परमेश्वर का पुत्र सचमुच मनुष्य बना और हमारे लिए जीवन लाया। **अनन्त जीवन पिता के साथ था। उसकी ओर उन्मुख। पिता और पुत्र का जीवन। यीशु के द्वारा वह हमारा जीवन बन जाता है और हमें पिता से जोड़ देता है। उसकी सन्तान के रूप में!**

हमें तुम्हें वह सब बताना ही है जो हमने यीशु के विषय में देखा और सुना है। जब तुम इसे सुनोगे और विश्वास करोगे, तब यीशु हमारा साझा केंद्र बन जाएगा। सब बातों का हृदय, जो हमें जोड़ता है। यीशु में, और किसी में नहीं, हमारी आपस में सहभागिता है। और, चाहे यह कितना ही अविश्वसनीय लगे: स्वर्गीय पिता के साथ और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ सहभागिता। क्योंकि उसने हमें परमेश्वर के जीवन में भागी बनाया।

यीशु के द्वारा हम सब, तुम और हम, सचमुच वे सब जो यीशु के पीछे चलते हैं, एक मन और एक प्राण हैं। एक परिवार, जो एक साथ है और जिसका सब कुछ साझा है। जो सब कुछ बाँटता है। इस एकता में त्रिएक परमेश्वर का अनन्त आनंद उतर आया है। परमेश्वर के परिवार में आ पहुँचा है। एक ऐसा आनंद, जो सांसारिक और दुनियावी आनंद को बहुत पीछे छोड़ देता है। जिससे बड़ा कोई आनंद नहीं हो सकता। जिसे वे सब अनुभव करते हैं और जो उन सब को प्रेरित करता है, जो जागते हृदय के साथ, सक्रिय होकर और हाथ बँटाते हुए परमेश्वर के परिवार की सहभागिता में जीते हैं।

परमेश्वर सबसे शुद्ध ज्योति है – परमेश्वर की ज्योति में जीवन – यीशु के लहू के नीचे क्षमा 1:5–10

पर सावधान रहो! यह सब जितना विशेष और अनोखा है, फिर भी कुछ ऐसा है जो इस सहभागिता के लिए ख़तरा है। कुछ ऐसा है जो इस सहभागिता और परमेश्वर की निकटता से बिलकुल मेल नहीं खाता। यीशु का संदेश हमेशा साफ़ और स्पष्ट था। उसने हम प्रेरितों का ध्यान एक बहुत महत्वपूर्ण बात की ओर दिलाया, जिसे तुम्हें बताना हमारे लिए अनिवार्य है। यदि हम ऐसा न करते, तो हम तुम्हारे प्रति दोषी ठहरते: **सनातन परमेश्वर पवित्र है। वह स्वयं सबसे शुद्ध और सबसे उज्ज्वल ज्योति है। वह ज्योति में वास करता है। उसमें अन्धकार का लेश भी नहीं।** वह पाप को स्वीकार नहीं करता और ऐसी किसी भी बात से कभी समझौता नहीं करता जो उसके महिमामय स्वभाव के विरुद्ध है। ऐसी बातें मनुष्यों को और उसकी भली सृष्टि को नष्ट करती हैं। उदाहरण के लिए प्रेमहीनता, कृतघ्नता, स्वार्थ, और उसकी भली आज्ञाओं की अवहेलना या उनके विरुद्ध विद्रोह – जबकि वे आज्ञाएँ हमारे लिए सबसे उत्तम हैं। इस प्रकार का अन्धकार परमेश्वर में – और यीशु में भी – बिलकुल नहीं पाया जाता। निःसंदेह इसका अर्थ शाब्दिक या भौतिक अर्थ में अन्धकार नहीं है। बात उस अन्धेरे की है जो हमारे हृदयों को आत्मिक रूप से अंधकारमय कर देता है। जो जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण को दिशाहीन कर देता है। पाप और अधर्म से संक्रमित एक दशा, इस महिमामय परमेश्वर से अलगाव, जो ज्योति है।

इसलिए यदि हम दावा करें – जैसा तुम्हारे बीच कुछ लोग करते हैं – कि इस महिमामय परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता है, पर हम अन्धकार में, अर्थात् अपनी ही इच्छा के अनुसार, परमेश्वर की परवाह किए बिना जीते हैं, तो यह सरासर झूठ होगा। और कभी सत्य नहीं। पर यदि हम परमेश्वर की उस ज्योति में जीते हैं, जिसमें यीशु ने हमें एक ही बार सदा के लिए पहुँचा दिया है, तो आपस में भी और पिता और उसके पुत्र के साथ भी हमारी जीवित और स्थायी सहभागिता है। उसकी ज्योति में, उसके प्रेम में और पिता के घर के आनंद में।

क्या हम परमेश्वर की इस पवित्र ज्योति में सचमुच जी और बने रह सकते हैं? हम तो बार-बार चूकते और पाप करते हैं! हाँ, हम रह सकते हैं। परमेश्वर का सदा धन्यवाद हो। यही कारण है कि हम उसकी ज्योति में सदा के लिए घर में रह सकते हैं: **उसका लहू! उसके पुत्र यीशु मसीह ने क्रूस पर अपना लहू, अपना जीवन बलिदान कर दिया। इसके द्वारा हम अपने पापों से सदा के लिए शुद्ध किए गए हैं। यह**

बहुमूल्य, एक बार बहाया गया लहू हमें तब तक शुद्ध करता है, जब तक हम पाप करते रहेंगे। तब, आज और भविष्य में भी! हम हमेशा परमेश्वर के साथ सहभागिता में हैं। तब भी, जब हम अभी पाप करते हैं। चाहे हमारा आनंद धुँधला पड़ जाए या पूरी तरह चला जाए, तब भी हम परमेश्वर के परिवार से निकाले नहीं जाते।

यीशु का लहू हमारी अनन्त सुरक्षा और गारंटी है। न हमारी आज्ञाकारिता परमेश्वर के साथ सहभागिता को संभव बनाती है, न हमारी अवज्ञा उसे नष्ट करती है। परमेश्वर अपने पुत्र के बहुमूल्य लहू को देखता है – केवल इसी कारण हम अनन्तकाल तक सुरक्षित हैं। सदा के लिए। ठीक वैसे ही जैसे उस समय फसह के मेम्ने के लहू ने सब इस्राएलियों को न्याय से बचाया था। **हम अपने सब पापों से शुद्ध किए जाते हैं। उनसे भी जिन्हें हम अनदेखा कर देते हैं, भूल जाते हैं या जिनका हमें पता ही नहीं होता। और उनसे भी, जो दुःख की बात है, हम आगे भी करेंगे।**

पर यदि कोई सोचे, जैसा झूठे शिक्षक दावा करते हैं, कि हम में कोई पाप है ही नहीं और हमें यीशु के लहू के द्वारा शुद्ध होने की कोई आवश्यकता नहीं, तो यह एक बड़ी भूल है। तब हम सत्य और वास्तविकता से कटकर जी रहे होते। हम स्वयं को भटका रहे होते। हमारे पाप हमें विनाश में धकेल देते।

निष्पाप होने के इस झूठ और आत्म-छल से छुटकारा पाने का केवल एक ही मार्ग है। **केवल जब हम अपने पापों को पहचान लेते हैं और परमेश्वर के सामने मान लेते हैं, तभी हम अपने पापों से छूटते हैं। केवल इसी तरह हमें वह क्षमा मिलती है, जो परमेश्वर हमें यीशु के लहू के द्वारा देना चाहता है।** केवल उन पापों को पहचानकर और मान लेकर, अर्थात् उन्हें मुँह से कहकर, जिनका हमें पता है, हम परमेश्वर के साथ सच्ची और जीवित सहभागिता में आते हैं। पिता और पुत्र के साथ। और इस प्रकार यीशु के उन सब अनुयायियों की सहभागिता में भी, जो यीशु के शुद्ध करने वाले लहू के नीचे जीते हैं। हमें सब पापों की क्षमा दी जाती है। फिर से कहता हूँ: उनकी भी, जिन्हें हम भूल गए हैं या जिनका हमें पता नहीं। और उनकी भी, जो हम अभी करेंगे।

क्या हमने यह कमाया है, या क्या हमारा कोई अधिकार है कि परमेश्वर हमारे पाप हम से दूर कर दे? नहीं! पर यीशु, जिसने हमारे लिए अपना जीवन दे दिया, इस बात का निश्चय है कि परमेश्वर क्षमा करता है। यीशु के बहुमूल्य लहू का अर्थ है उसका पवित्र और निष्पाप जीवन। **उसने उसे हमारे लिए बलिदान कर दिया। हमारे लिए किया गया यह निःस्वार्थ, आज्ञाकारी बलिदान परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल है। इसलिए वह हर उस व्यक्ति को ख़ुशी से क्षमा करता है जो सच्चे मन से, खुलकर और ईमानदारी से उसके सामने अपना पाप मान लेता है। इसके लिए उसने स्वयं को वचनबद्ध किया है। अपने पुत्र के इसी लहू के आधार पर। परमेश्वर अपने वचन पर हमेशा अटल रहता है! क्योंकि वह विश्वासयोग्य और धर्मी है!**

एक बार फिर, और इसलिए कि सबको यह जानना आवश्यक है: जो दावा करता है कि हम मनुष्य, जैसे जन्म लेते हैं, या परमेश्वर की सन्तान भी, अपने-आप निष्पाप जीते हैं, वह स्वयं को धोखा देता है। इससे भी

दुखद आत्म-छल यह है कि हम पाप करें और सोचें कि यह पाप नहीं है। तब तो हम परमेश्वर को झूठा ठहराते हैं। क्योंकि उसने हमें स्पष्ट दिखाया है कि पाप क्या है। जो सचमुच मानता है कि उसमें कोई पाप नहीं और वह निष्पाप जीता है, वह खोया हुआ है। क्योंकि वह यीशु के लहू का सहारा नहीं लेता। वह अपने पाप नहीं मानता! जो मानता है कि हम निष्पाप हैं – विचारों में, आत्मिक रूप से या शारीरिक रूप से – वह भूल करता है। यह एक झूठी शिक्षा है, जो विनाश की ओर ले जाती है।

जब मसीही पाप करते हैं: हमारा सहायक, धर्मी यीशु 2:1–2

मेरे प्रिय मित्रो, विश्वास में मेरे बालको, यह हमारे लिए स्वाभाविक बात है, मुझे इसे लिखने की आवश्यकता ही नहीं होनी चाहिए: **पाप मत करो!** जब सनातन, पवित्र और महिमामय परमेश्वर हम सृजे हुए और पतित मनुष्यों को अपनी सहभागिता में ग्रहण करता है, तो हमारे लिए पाप वर्जित होना चाहिए। हमारे लिए भी ठीक वही, जो उसके लिए है, अर्थात् अन्धकार। आओ, हम इस विषय में वैसा ही सोचें और अनुभव करें जैसा वह करता है। पाप के प्रति हमारा “नहीं” बढ़ता और दृढ़ होता जाए।

परमेश्वर के साथ सहभागिता में यह भी शामिल है कि हम अपनी असफलता को ईमानदारी से देखें और स्वीकार करें। क्योंकि हमें ईमानदारी से स्वयं से पूछना होगा: क्या हम जो कुछ करते हैं, उसमें सचमुच कुछ ऐसा है जो पूरी तरह शुद्ध और पवित्र हो? दुःख की बात है कि हम हर दिन पाप करते हैं। अनजाने में और कभी-कभी जानबूझकर भी। हम जानते हैं कि पाप क्या है, फिर भी उसे करते हैं। पर यदि परमेश्वर की सन्तान होकर हमने फिर एक बार पाप कर दिया, तो इस कारण हम कभी खोए हुए नहीं हो जाते। यदि हम ऐसा सोचते भी हैं, तो पिता और पुत्र ऐसा नहीं सोचते। उनके साथ सहभागिता टूटती नहीं। घटती भी नहीं। यदि कुछ घटता है, तो इस सहभागिता का बोध, उसका अनुभव। पर संबंध, अपनापन और पारिवारिक बंधन नहीं। **क्योंकि सब कुछ पहले ही क्षमा किया जा चुका है। हमें नए सिरे से क्षमा की आवश्यकता नहीं।** स्वयं यीशु, पिता का पुत्र, जो हमारे लिए मरा, पिता के पास भी हमारे लिए उपस्थित है। वह पिता के पास हमारा वकील, सहायक और मददगार है। जो हमें फिर से खड़ा करता है। वह, जो धर्मी है, हमारी सुरक्षा है, हमारी गारंटी कि हम उसकी सन्तान हैं और बने रहेंगे। एकमात्र वही सिद्ध था, जैसे स्वर्गीय पिता पूर्ण रूप से धर्मी है।

यीशु ने अपने लहू के द्वारा हमारे सब पाप मिटा दिए हैं। नष्ट कर दिए हैं। **वह हमारे पापों का सिद्ध और अद्वितीय प्रायश्चित्त-बलिदान है।** और सारे संसार के पापों का भी। सब के लिए, सारी सृष्टि के लिए।

परमेश्वर अब हम में कुछ भी अधर्मी या अशुद्ध नहीं पाता। क्योंकि हमारे सब पाप, परमेश्वर और मनुष्यों के विरुद्ध हमारे सब अधर्म के काम, यीशु की मृत्यु में प्रायश्चित्त के द्वारा मिटा दिए गए: क्षमा किए गए और दूर कर दिए गए। **उसका बलिदान इतना महान और बहुमूल्य है कि वह संसार के सब मनुष्यों के सब पापों को मिटा सकता है।** जो कोई मसीह और उसके बलिदान में शरण लेता है, उसे क्षमा का आश्वासन दिया जाता है।

सत्य की कसौटी: अंगीकार और आचरण की एकता 2:3–6

तो हम कैसे जान सकते हैं कि हम यीशु को जानते हैं और उसके पीछे चलते हैं? बस इस बात से कि हम उसकी **आज्ञाओं** से प्रेम करते हैं और उन पर चलते हैं। यदि कोई दावा करता है कि यीशु के साथ उसका एक जीवित और जीवन बदल देने वाला संबंध है, पर वह उसकी आज्ञाओं पर नहीं चलता, यहाँ तक कि प्रयास भी नहीं करता, तो वह स्वयं से झूठ बोलता है। और दूसरों से भी। ऐसे व्यक्ति में परमेश्वर का सत्य उपस्थित नहीं हो सकता। पर जो यीशु के वचनों पर चलता है, उसमें परमेश्वर का प्रेम घर कर लेता है – हाँ, अपने लक्ष्य तक पहुँच गया है। उसने परमेश्वर के प्रेम को केवल ग्रहण ही नहीं किया, बल्कि उसे लौटाया और आगे भी बाँटा है।

यदि हम उसके वचन को मानते और उस पर चलते हैं, तो हम यीशु में हैं। जो कहता है कि वह यीशु के साथ जीता है, उसके पीछे चलता है, उसके पास इसके सिवा कोई विकल्प नहीं कि वह वैसे ही जिए जैसे यीशु जिया। तब लोग पहचानते हैं कि यीशु का प्रेम, उसकी दया, उसका सत्य और उसकी पवित्रता हम में भी दिखाई देती है।

पुरानी और नई आज्ञा: प्रेम सबसे बड़ा बना रहता है – अन्धकार मिटता जाता है 2:7–11

प्रिय मित्रो, वास्तव में मैं तुम्हें कोई नई आज्ञा नहीं लिख रहा। वह तब नई थी, जब यीशु ने उसे हम चेलों को दिया था। पीछे मुड़कर देखें, तो यह पुरानी, मूल, पर आज भी लागू आज्ञा है। तुमने इसे तब पाया, जब तुमने विश्वास से यीशु को ग्रहण किया। साथ ही यह सदा के लिए एक **नई आज्ञा** है: क्योंकि **यीशु के द्वारा इसे एक बिलकुल नया आयाम मिला है – प्रेम की आज्ञा के रूप में**। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। प्रेम की यह आज्ञा सचमुच उसमें जीवित थी – और आज हम में है। उसका जीवन हमारा जीवन भी बन गया है। हाँ, वह हम में जीता है! इसी तरह, केवल इसी तरह, हम उसकी तरह जी और प्रेम कर सकते हैं। यीशु में सच्ची ज्योति संसार में आई। उसके साथ भविष्य का नया युग आरंभ हो गया। अन्धकार को अधिक से अधिक पीछे हटना पड़ रहा है। वह हमारे हृदयों और जीवन से भी भगा दिया गया है। हम परमेश्वर की ज्योति में जीते हैं। वही हमारा घर है। वहाँ हमें अच्छा लगता है। और वह दिन जल्द आ रहा है, जब अन्धकार पूरी तरह मिट जाएगा और यीशु सब कुछ प्रकाशित कर देगा।

जो दावा करता है कि वह इस ज्योति में जीता है, पर अपने पड़ोसी से प्रेम नहीं, बल्कि घृणा करता है, वह अनिवार्य रूप से अन्धकार का है। घृणा का घर अन्धकार में है। वहीं घृणा खुलकर अपना रूप दिखाती है। पर जो अपने पड़ोसी से प्रेम करता है, वह ज्योति का है। परमेश्वर की ज्योति में वह सुरक्षित है और देख सकता है। वह ठोकर नहीं खाता और विश्वास से नहीं गिरेगा। मुझे यह फिर से कहना होगा: जो अपने पड़ोसी से घृणा करता है, वह अन्धकार में है। यह घातक है, क्योंकि जो अन्धेरे में चलता है, वह नहीं देखता कि कहाँ जा रहा है। अन्धेरे में वह अंधा है।

परमेश्वर का परिवार और संसार 2:12–17

हे परमेश्वर के प्रिय **छोटे बच्चो**, मैं तुम्हें लिखता हूँ: तुम्हारे सब पाप, वे भी जो तुम अभी करोगे, तुम्हें क्षमा किए गए हैं! इसका कारण केवल परमेश्वर की दया और विश्वासयोग्यता है, जिसकी हमसे यीशु में प्रतिज्ञा की गई है और जो हमें दी गई है। उसका नाम इसकी ज़मानत है!

तुम, जो आत्मिक रूप से बढ़कर विश्वास में **पिता और माताएँ** बन गए हो: तुम यीशु को सब से बढ़कर जानते हो और उससे प्रेम करते हो।

हे **युवाओ**, तुम भी ऐसे ही पिता और माताएँ बनोगे। अभी तुमने यीशु के द्वारा विश्वास में उस दुष्ट, शैतान, पर जय पाई है। तुमने संघर्ष का सामना किया है, दृढ़ बने रहे हो।

हे **बच्चो**, तुम जो अभी थोड़े ही समय से विश्वास में हो, तुमने सबसे महत्वपूर्ण, सबसे मूल बात पहचान ली है: परमेश्वर, सनातन, तुम्हारा स्वर्गीय पिता है। तुम उसके पितृ-प्रेम में जीते हो।

हे **पिताओ और माताओ**, मैंने तुम्हें लिखा है, क्योंकि यीशु के विषय में तुम्हारा ज्ञान, उसके प्रति तुम्हारा प्रेम और उत्साह तुम्हें वह बनाता है, जो तुम अब दूसरों के लिए हो सकते हो।

हे **विश्वास में युवाओ**, मैंने तुम्हें लिखा है, क्योंकि तुम यीशु में बलवान हो। सबसे बढ़कर इसलिए कि परमेश्वर का वचन, वह सब जो यीशु ने कहा है, तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण है। तुम उस पर चलते हो। यीशु और उसके वचन के साथ तुम शैतान को हराने में सफल हुए हो। जो झूठी शिक्षाएँ वह फैलाता है और जिन लोगों को उसने भटका दिया है, वे सब तुम्हें अचानक बहका नहीं सके।

तुम सब सावधान रहो, और उन बातों से प्रेम मत करो जिनसे वे लोग प्रेम करते हैं और जो वे करते हैं, जिन्हें परमेश्वर और यीशु की कोई परवाह नहीं। यही संसार है। अपना मन संसार में मत लगाओ। सच्चा प्रेम केवल एक ही को गले लगा सकता है। जो अविश्वासियों जैसा जीवन चाहता है, या उनसे ईर्ष्या करता है, वह स्वर्ग में रहने वाले **पिता के महान प्रेम** को नहीं जानता। पिता का प्रेम परमेश्वर से दूर संसार में घर नहीं कर सकता। वहाँ उसका स्वागत नहीं है। न कभी था, न आज है और न कभी होगा।

तुम जानना चाहते हो कि संसार को किस बात से पहचाना जा सकता है, उसे क्या बेचैन रखता है, हाँ, क्या उसे जीवित रखता और आगे धकेलता है?

हर प्रकार की **अभिलाषा** के आगे झुक जाना और उसे खुलकर जीना – चाहे वह धन का लोभ हो, मान-सम्मान की भूख, शराब की लत, चुगली और गपशप, यौन-वासना, सनसनी की चाह, पेटूपन, या और बहुत कुछ।

आँखों की अभिलाषा, जो केवल इस लोक की, दिखाई देने वाली और लुभाने वाली बातों को देखती है। और इस तरह जीवन के सच्चे अर्थ को सचमुच आँखों से ओझल कर देती है।

जीविका का घमण्ड – जैसे दिखावा, अहंकार, स्वयं को बढ़ा-चढ़ाकर आँकना और दूसरों से तुलना करना, दूसरों को सताना, अपनी योग्यताओं और संपत्ति की डींग मारना, और बहुत कुछ।

यह सब एक असाध्य रोग की तरह मनुष्यों को सताता है। जब मनुष्य अपने जीवन का स्वामी स्वयं होता है, तो वह ऐसे ही जीता है। परमेश्वर के बिना बहुत-से लोग स्वयं को अपने जीवन का राजा समझते हैं। वे सब कुछ अपने लिए ले लेते हैं, मानो परमेश्वर है ही नहीं। ऐसी अभिलाषाएँ कभी स्वर्गीय पिता की ओर से नहीं आतीं। और इसलिए वे एक दिन इस संसार-व्यवस्था के साथ सदा के लिए मिट जाएँगी। जो यीशु कहता है, उसे करना ही संसार के विनाश से बच निकलने का एकमात्र उपाय है। परमेश्वर की इच्छा पर चलना ही भविष्य की एकमात्र आशा है। परमेश्वर के नए, अनन्त, पवित्र, महिमामय, आने वाले संसार को ज्योति में अनुभव करने का एकमात्र अवसर। सदा के लिए, अनन्त जीवन में।

मसीह-विरोधी और अनेक मसीह-विरोधी 2:18–19

हे परमेश्वर की सन्तानो, यीशु के साथ **अंतिम घड़ी** आरंभ हो चुकी है। उसने कहा था कि **मसीह-विरोधी**, **झूठा उद्धारक**, आएगा। पर अभी से बहुत-से मसीह-विरोधी प्रकट हो रहे हैं, जो एक नकली मसीह की तरह स्वयं को यीशु के स्थान पर बैठा लेते हैं। उन्होंने स्वयं को उसके विरुद्ध और हमारे विरुद्ध खड़ा कर लिया है। इसलिए हम कह सकते हैं कि अंतिम घड़ी आ गई है। सत्य के विरुद्ध यह विद्रोह ही अंतिम घड़ी की पहचान है, वह अंतिम समय, जब तक सच्चा मसीह नहीं आता। दुःख की बात है कि ये मसीह-विरोधी लोग मूल रूप से हम ही में से निकले हैं। हमारे ही बीच से। उन्होंने दावा किया कि वे परमेश्वर के परिवार के हैं। पर यह सच नहीं था। यदि यह सचमुच सच होता, तो वे हमारे साथ बने रहते। पर परमेश्वर ने उनका पर्दाफ़ाश कर दिया: वे परमेश्वर से नहीं, बल्कि उस दुष्ट से हैं। हमारे बीच उनका कोई स्थान नहीं। क्योंकि वे सब असत्य सिखाते और फैलाते हैं।

पवित्र आत्मा का अभिषेक और पिता और पुत्र के विषय में सत्य 2:20–29

हम सब के पास **यीशु की ओर से अभिषेक** है। उस पवित्र जन की ओर से। यह पवित्र आत्मा है। उसे उसने हम पर उँडेला। उसी ने हमें सिखाया है कि यीशु ही मसीह है। पिता का अनन्त पुत्र। मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम ये बातें पहली बार सुनो। क्योंकि तुम उन्हें पहले से जानते हो। उन्हें थामे रहो। इन लोगों के झूठ का सत्य से कोई भी संबंध नहीं।

तो यीशु के विषय में बोलने वाले किन लोगों को झूठा कहना होगा? **उन्हीं को, जो इनकार करते हैं कि नासरत का यीशु परमेश्वर द्वारा चुना हुआ मसीहा है! ऐसा व्यक्ति ही मसीह-विरोधी है, जो पिता का और उसके पुत्र यीशु का इनकार करता है। वह कहता है कि परमेश्वर पिता है ही नहीं और उसका कोई पुत्र हो ही नहीं सकता।** इसलिए जो इनकार करता है कि यीशु पिता का पुत्र है, वह न पिता को जान सकता है, न उसे अपना पिता बना सकता है। पर जिसके लिए यीशु पिता का पुत्र है और जो इस पर दृढ़ रहता है, इसकी गवाही देता है, उसके पास परमेश्वर पिता है। वह सचमुच परमेश्वर की सन्तान है। यही तुमने

आरंभ से भी सुना है। यदि तुम इसे ऐसे सत्य के रूप में थामे रहते हो जो बिकाऊ नहीं, तो तुम परमेश्वर की ज्योति में हो। पिता और पुत्र से जुड़े हुए।

हमारे लिए, जो इसे थामे रहते हैं और इसके पक्ष में खड़े होते हैं, पिता की अनोखी प्रतिज्ञा लागू होती है। उसे उसने अपने पुत्र में, जीवन के वचन में, मनुष्य यीशु में पूरा किया है: अनन्त जीवन। नश्वर मनुष्य होते हुए, पापी होते हुए, हमें अनन्त जीवन मिलना है! पाप और मृत्यु पराजित हो जाएँगे।

यह सब मुझे तुम्हें लिखना ही है। क्योंकि ये लोग, घूमते-फिरते प्रचारक, इधर-उधर जा रहे हैं, जो तुम्हें भटकाना चाहते हैं और तुमसे ये महिमामय और जीवन-मरण से जुड़े सत्य छीन लेना चाहते हैं। मैं एक बार फिर उस अभिषेक की बात करता हूँ, जो तुम्हें यीशु से मिला है। यह तो परमेश्वर का आत्मा है, जो तुम में और तुम्हारे साथ बना रहता है। इसलिए तुम्हें इन भटकाने वालों और झूठों से शिक्षा लेने की आवश्यकता नहीं। उनकी बातों पर कान मत दो। पवित्र आत्मा पर भरोसा रखो। वही तुम्हें सिखाता है कि सत्य क्या है। पिता के पुत्र यीशु के निकट बने रहो।

और अब, मेरे मित्रो, मैं आगे की ओर देखता हूँ। मैं वह दिन देखता हूँ, जब यीशु सब के देखते आकाश में प्रकट होगा। वह सबसे बड़े आनंद का दिन होगा। एक अतुलनीय पर्व का दिन, जब हम आख़िरकार अपने प्रभु यीशु से अपनी सब इंद्रियों के साथ मिलेंगे। यदि हम इस महिमामय दिन को ऐसे अनुभव करना चाहते हैं, तो आओ, अभी से यीशु के साथ ऐसे जिएँ, मानो वह दिखाई देते हुए हमारे साथ हो। और उस दिन तक विश्वासयोग्यता और उत्साह से उसके पीछे चलें। यदि हम ऐसा नहीं करते, तो वह दिन हमें अचानक आ घेरेगा। या हमें डरा देगा और लज्जित करेगा। और आशा है कि तब यह प्रकट नहीं होगा कि तुम में से कुछ उसके थे ही नहीं।

जब हमने पहचान लिया है कि परमेश्वर कितना पूर्ण रूप से धर्मी है, तब हम यह भी जान सकते हैं कि कोई परमेश्वर से जन्मा है और नई सृष्टि है या नहीं। अर्थात् तब, जब वह परमेश्वर की धार्मिकता से प्रेम करता है, उसे जीता है और उस पर चलता है।

कैसा उपहार: हम परमेश्वर की सन्तान हैं, घर की ओर मार्ग पर 3:1–3

क्या तुम सचमुच अनुमान लगा सकते हो कि परमेश्वर पिता हम से कितने असीम प्रेम से प्रेम करता है? उसने तो हमें अपनी सन्तान बना लिया है! अपनी ही ओर से। यह उसकी अनन्त योजना और इच्छा थी। कोई भी, न कोई मसीह-विरोधी और न कोई झूठा भविष्यद्वक्ता, इसे हम से छीन सकता है या इस पर प्रश्न उठा सकता है। यह सच है: **हम सचमुच परमेश्वर की सन्तान बन गए हैं**। उसने यही चाहा।

हमारे बाहरी रूप से, हमारे शरीर से या हमारी योग्यताओं से इस नई सन्तान-स्थिति को पहचाना नहीं जा सकता। अभी यह सब अदृश्य है। यीशु को भी बाहर से परमेश्वर के पुत्र के रूप में नहीं पहचाना गया। वह और हम दूसरे सब मनुष्यों से अलग नहीं दिखते थे। संसार के लिए हम सब के समान हैं। जब विश्वास की

बात आती है, तो हम उसके लिए परदेशी हैं। देखो, हम परमेश्वर की सन्तान हैं! चाहे परमेश्वर की सन्तान होने के वे सब महिमामय गुण, जो भविष्य में हमारे होंगे, अभी बाहर से दिखाई नहीं देते।

एक बात अभी से निश्चित है: **परमेश्वर की सब सन्तान शीघ्र ही महिमान्वित यीशु मसीह के समान होंगी।** उसके समान, जो आकाश में प्रकट होता है और पृथ्वी पर आता है। सब मनुष्यों को दिखाई देता हुआ। हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और चकित होंगे। उसके पास बने रहेंगे। इस क्षण को और जो उसके बाद आएगा उसे अनुभव करना, यह लंबे समय से प्रतीक्षित भेंट, हमारी आशा का केंद्र है। इसी के लिए हम जीते हैं। यह आशा हमें प्रतिदिन प्रेरित करती है कि हम बिना समझौते के अपने जीवन से वह सब दूर कर दें जो उससे मेल नहीं खाता। उसकी पवित्रता और महिमा और धार्मिकता से। इस तरह हम अभी से उसके अधिकाधिक समान बनते जाते हैं। और उसके आगमन के लिए तैयार।

पाप, शैतान और परमेश्वर का पुत्र 3:4–10

जो ऐसे जीता है मानो कोई परमेश्वर नहीं, वह वास्तव में पापी है। ऐसा व्यक्ति, जो अपने अनन्त लक्ष्य से चूक जाता है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे बनाया है। वही उसे जीवित रखता है। उसे उसका आभारी होना चाहिए। ऐसी जीवन-शैली को व्यवस्थाहीनता भी कहा जाता है। जो परमेश्वर और उसके अधिकार का इनकार करता है, वह अराजकता में जीता है। परमेश्वर के बिना जीवन जीकर मनुष्यों ने अविश्वसनीय रूप से बहुत-से पाप इकट्ठे कर लिए हैं। परमेश्वर और मनुष्यों के विरुद्ध इन पापों को कोई अनकिया नहीं कर सकता। मानवीय साधनों से उनकी भरपाई कभी नहीं हो सकती। पर यीशु ठीक इसीलिए आया, कि हमारे पापों को दूर कर दे। वह उन्हें ऐसे दूर कर सकता है, मानो वे कभी हुए ही न हों। यह कोई नहीं कर सका! केवल वही। क्यों? क्योंकि वह किसी भी रूप में पाप से संक्रमित नहीं था और उसने कभी पाप नहीं किया। **वही धर्मी था, जिसने हमारे पाप उठाए और उन्हें नष्ट कर दिया।**

जो यीशु के पीछे चलता है और वही करना चाहता है जो वह कहता है, वह पाप की आज्ञा नहीं मानता। वे सब जो ऐसे जीते हैं मानो परमेश्वर है ही नहीं, उन्होंने न तो यीशु को समझा है, न स्वयं को अपने जीवन के उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में उसके अधीन किया है।

हे परमेश्वर की सन्तानो, कोई समझौता मत करो! परमेश्वर की दृष्टि से हमेशा केवल “या तो – या” होता है! इसीलिए मैं धूसर क्षेत्रों की बात नहीं करता। ताकि तुम समझ सको, मैं उन सत्यों को, जो मैं तुम्हें सौंपता हूँ, सचमुच काले और सफ़ेद की आमने-सामने तुलना के रूप में ज़ोर देकर रखता हूँ। जो परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहता है और उसकी आज्ञाओं के अनुसार जीता है, वह धर्मी है। वैसे ही जैसे यीशु अपने जीवन में धर्मी था। जो ऐसे जीता है मानो परमेश्वर है ही नहीं, वह पाप करता है और अपने जीवन के लक्ष्य से चूक जाता है। ऐसे लोग तब वही करते हैं जो शैतान हमेशा से करता आया है। उसने आरंभ से ही परमेश्वर के अधिकार को ठुकरा दिया। यही अराजकता वह फैलाता है। हाँ, उसने स्वर्गदूतों और मनुष्यों को भी यही करने के लिए बहका दिया। जो कोई पाप करता है, वह अंततः शैतान से प्रेरणा लेता है और उसी के पक्ष में

खड़ा है। **पर परमेश्वर का पुत्र इसलिए आया कि जो कुछ शैतान ने बिगाड़ा है, उस सब को नष्ट कर दे।** उसकी सारी बुरी करतूतें, मनुष्यों के जीवन में उसके छोड़े हुए सब निशान। अंतिम शब्द शैतान के कामों का नहीं है! यह अभी से देखा जा सकता है। क्योंकि परमेश्वर की हर सन्तान परमेश्वर से जन्मी है और इसलिए अब पाप के द्वारा निर्धारित और शासित नहीं है। कि परमेश्वर की सन्तान को लगातार पाप करते रहना नहीं पड़ता – यह केवल हम में परमेश्वर का काम है! परमेश्वर का जीवन, उसका वचन और उसका आत्मा उसकी सन्तान में उपस्थित हैं। इसलिए यह संभव ही नहीं कि उसकी सन्तान पाप से प्रेम करे और ऐसे जिए मानो पिता है ही नहीं। अंत में कोई अपने सच्चे स्वभाव का इनकार नहीं कर सकता। वह या तो परमेश्वर से है या शैतान से। इसलिए इस विषय में किसी को स्वयं को धोखा नहीं देना चाहिए। वे सब जो परमेश्वर की परवाह नहीं करते और वैसे ही जीते भी हैं, परमेश्वर से जन्मे और परमेश्वर की सन्तान हो ही नहीं सकते। परमेश्वर की सन्तान को सबसे बढ़कर पड़ोसी से प्रेम के द्वारा पहचाना जाता है। जो अपने पड़ोसी से निःस्वार्थ भाव से और कामों के द्वारा प्रेम नहीं करता, जैसा यीशु ने किया, वह परमेश्वर से जन्मा नहीं है। वह शैतान की सन्तान है।

प्रेम – परमेश्वर की सन्तान होने का जीवन-चिह्न 3:11–18

जब तुमने पहली बार यीशु और उसके शुभ संदेश के विषय में सुना, तब एक दूसरे से प्रेम ही निर्णायक बात थी। उसी से बड़ा अंतर पड़ता था। यह सदा ऐसा ही बना रहे कि हम एक दूसरे से प्रेम करें। इसके विपरीत का एक भयावह उदाहरण कैन की पुरानी कहानी है। बिलकुल आरंभ में। उसने अपने भाई हाबिल की हत्या करके शैतान से, उस दुष्ट से, प्रेरित होकर काम किया। उसने ऐसा क्यों किया? जो उसने किया, वह बुरा था। क्योंकि वह उस दुष्ट से था। पर उसका भाई धर्मी था। हाबिल शैतान से नहीं, परमेश्वर से था।

इसलिए यदि आज भी ऐसा बार-बार होता है, तो आश्चर्य मत करो। भले, पवित्र, धर्मी और प्रेमपूर्ण से घृणा करना बुराई के स्वभाव में है। हाँ, उसे नष्ट करना भी। जो लोग परमेश्वर के बिना जीते हैं, वे कम या अधिक हम से घृणा करते हैं। क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि हम वही करना चाहते हैं जो परमेश्वर चाहता है। उनके और हमारे बीच का अंतर इससे बड़ा नहीं हो सकता। **हम, परमेश्वर से जन्मे होने के कारण, मृत्यु से पार होकर जीवन में बचा लिए गए हैं।** मृत्यु जीवन को नष्ट करना चाहती है। मार डालना चाहती है। यह घृणा के सिवा और कुछ नहीं।

परमेश्वर की सन्तान का सच्चा और असली जीवन-चिह्न यह है कि हम पड़ोसी से प्रेम करें। सबसे बढ़कर परमेश्वर की सन्तान से। इसका उलटा अर्थ निःसंदेह यह है: जो पड़ोसी से प्रेम नहीं करता, वह अब भी मृत्यु में है। वह परमेश्वर की सन्तान नहीं है। जो कोई अपने पड़ोसी से घृणा करता है, वह तो कैन की तरह हत्यारा है – चाहे वह सचमुच किसी को मार डाले या मन और हृदय से उससे घृणा करे। सब के लिए यह स्पष्ट होना चाहिए कि जो पड़ोसी से घृणा करता है, उसके पास अनन्त जीवन नहीं हो सकता। चाहे थोड़े समय के लिए शायद ऐसा लगा हो।

हम कैसे पहचानें कि प्रेम से वास्तव में क्या अभिप्राय है? **सबसे बड़ा आदर्श, और सच्चा ईश्वरीय प्रेम क्या है इसका मापदंड भी, हम यीशु में देखते हैं।** प्रेम के कारण उसने हमारे लिए अपना जीवन दाँव पर लगा दिया। क्रूस पर उसे बलिदान कर दिया। यदि उसने हमारे लिए यह किया, तो इसके सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता: हम परमेश्वर की सन्तान के लिए भी वही करेंगे। पड़ोसी के लिए भी। प्रेम को जीने का अर्थ यह होना आवश्यक नहीं कि हम तुरंत दूसरों के लिए अपना जीवन बलिदान कर दें। उदाहरण के लिए इसका अर्थ बस यह है कि मैं अपनी संपत्ति से ज़रूरतमंद की सहायता करूँ। उसे वह दूँ जिसकी उसे सख़्त ज़रूरत है। यदि किसी का अंतर्मन अपने पड़ोसी की ज़रूरत से नहीं पिघलता, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम उपस्थित नहीं हो सकता। परमेश्वर के प्रेम का स्वभाव ही यह है कि हम पड़ोसी की ज़रूरत को देखें, उससे द्रवित हों और सहायता के लिए सब कुछ लगा दें।

हे परमेश्वर की सन्तानो, केवल प्रेम के विषय में बोलना और उस पर बहुत-से शब्द बनाना बंद करो। परमेश्वर के सच्चे प्रेम को काम में जियो। खुले हृदय और खुले हाथ से। स्वार्थी उद्देश्यों के बिना।

उदार हृदय स्वर्गीय पिता पर भरोसा रख सकता है 3:19–24

पड़ोसी की सहायता करने के बजाय हमारा हृदय अक्सर उन चीज़ों से चिपका रहता है जिन्हें हमें दे देना चाहिए। जब हम पड़ोसी की भलाई के लिए अपने जीवन और अपनी संपत्ति को छोड़ देते हैं, तब हम सत्य में होते हैं। जब हमारा स्वार्थी हृदय नहीं छोड़ता, और निःस्वार्थ देने को दोषी भी ठहराता है, तब हम परमेश्वर की आज्ञा से, जो हम से बड़ी है, स्वयं को ऊपर उठा लेते हैं। तब, जब हम पड़ोसी से प्रेम करना अनावश्यक समझते हैं, या बात केवल शब्दों तक रह जाती है। परमेश्वर हमारे हृदय के, सहायता न करने के उद्देश्यों को और सहायता की तत्परता के विरुद्ध उसकी आपत्तियों को ठीक-ठीक देखता है। अपने हृदयों की इस भावना और इस संदेह का सामना करना हमें सीखना होगा। और परमेश्वर के प्रेम की आज्ञा को अधिक मान देना होगा। **जब हमारा हृदय पड़ोसी की उदारता और निःस्वार्थ भाव से सहायता करने के लिए छोड़ देता है, तब पिता पर हमारा भरोसा स्वतंत्र और आनंदित होता है।** आख़िर उसकी सन्तान होने के नाते वह हम से प्रेम करता है। हम उससे अपनी विनतियाँ कह सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं कि वह हमें देता है। जब हम पड़ोसी की ज़रूरत दूर करने के लिए उसे ख़ुशी से देते हैं, तब पिता भी हमें ख़ुशी से देता है। क्योंकि उसकी आज्ञा हमारे लिए महत्वपूर्ण है, और हम उसे ख़ुशी से पूरा करते हैं। इस प्रकार हमारा जीवन उसके लिए आनंद का कारण है। **जब हम ख़ुशी से देते हैं, तो वह हमें ख़ुशी से देता है!**

परमेश्वर पिता हमें यह दोहरी आज्ञा देता है: **अपना भरोसा पूरी तरह उसके पुत्र यीशु मसीह पर रखना** – उसकी महिमामय महानता पर, और इस बात पर कि वह हर बात के लिए, सचमुच हर बात के लिए, पर्याप्त है। जीवन में भी और मृत्यु में भी। **और यह कि हम एक दूसरे से प्रेम करें**, जैसा यीशु ने भी कहा है। जो इस आज्ञा पर चलता है, वह यीशु में बना रहता है और यीशु उसमें। क्या हम जान सकते हैं कि यीशु हम में है? हाँ, पवित्र आत्मा के द्वारा। वह एक रहस्यमय रीति से हमें उसकी उपस्थिति की गवाही देता है, जिसे केवल वही समझता है जो उसे अनुभव करता है। वह इस विषय में हमें भीतरी निश्चय और शान्ति देता

है। आत्मा केवल इसकी गवाही ही नहीं देता। यीशु ने उसे इसलिए दिया है कि वह सदा और हर समय हमारे साथ रहे।

एक वास्तविक संघर्ष – सत्य के लिए लड़ाई: यीशु कौन है 4:1–6

प्रिय मित्रो, संसार में बहुत-से **झूठे भविष्यद्वक्ता** घूम रहे हैं। झूठ बोलने वाले भविष्यद्वक्ता, जिनकी बात मैं पहले कर चुका हूँ। जो हमारे बीच से निकले हैं। परमेश्वर के आत्मा के विपरीत, जो तुम्हारे पास है, इन भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा झूठी आत्माएँ बोलती हैं। इसलिए हर उस मनुष्य पर विश्वास मत करो जो तुम्हें सिखाना चाहता है। परखो कि वह परमेश्वर की ओर से है या नहीं। परमेश्वर से आने वाले सच्चे आत्मा को तुम इस बात से पहचानते हो कि वह यीशु के विषय में सत्य का प्रचार करता है। अर्थात् यह कि यीशु मसीह सचमुच मनुष्य बना। कि वह पृथ्वी पर था, और सदा ऐसा ही बना रहता है। **उसने हमारा मानवीय अस्तित्व अपना लिया। उन सब बातों के साथ जो उससे जुड़ी हैं। पाप को छोड़कर।** यद्यपि वह पिता के पास अनन्त पुत्र था और सदा है। जो इस पर विश्वास नहीं करता और दूसरों के सामने इसे मान नहीं लेता, वह परमेश्वर की ओर से नहीं है। वह एक भटकाने वाली आत्मा से, मसीह-विरोधी की आत्मा से, भरा हुआ है। यह मसीह-विरोधी एक दिन खुलेआम, बड़े, सनसनीखेज़ और लुभाने वाले रूप में प्रकट होगा। पर आज भी यह आत्मा ऐसे झूठे भविष्यद्वक्ताओं और नकली मसीहाओं के द्वारा काम कर रही है। वे सच्चे मसीह के विषय में झूठ फैलाते हैं।

परमेश्वर की सन्तान परमेश्वर से जन्मी है। तुमने झूठे भविष्यद्वक्ताओं को पहचान लिया है और उन पर जय पाई है। क्योंकि तुम में **परमेश्वर का आत्मा** है, जो संसार की आत्मा से अधिक बलवान है। यद्यपि वे हमारे बीच से निकले हैं, फिर भी उनका आत्मिक मूल परमेश्वर में नहीं है। उनका उद्गम उस संसार में है जो परमेश्वर-रहित है, फिर भी धार्मिक है। वे वही बोलते हैं जो संसार से आता है और जो संसार को अच्छा लगता है। संसार उन पर ध्यान देता है। पर हम परमेश्वर से हैं। जो परमेश्वर को जानता और उससे प्रेम करता है, वह हमें समझता है। जो परमेश्वर से नहीं है, वह नहीं समझता कि हम क्या कहते हैं।

यह संकट और संघर्ष से भरी स्थिति है। बात “या तो – या” की है: बोलने वाला या तो सत्य का आत्मा है, या झूठ और भ्रम की आत्मा।

प्रेम, प्रेम, प्रेम 4:7–16

परमेश्वर के प्रिय मित्रो! आओ, हम एक दूसरे से प्रेम करें। क्यों? क्योंकि प्रेम ईश्वरीय है। वह परमेश्वर से आता है। वह सबसे शुद्ध और सबसे गहरे प्रेम का स्रोत है। जो कोई वैसे प्रेम करता है जैसे परमेश्वर प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है। वह परमेश्वर को जानता है और उससे प्रेम करता है। जो परमेश्वर की तरह प्रेम नहीं करता, वह उसे नहीं जानता। **क्योंकि परमेश्वर का सबसे गहरा और अनन्त स्वभाव शुद्ध, पवित्र, निष्कलंक प्रेम है।** ठीक यही पवित्र प्रेम परमेश्वर ने हमारी ओर बढ़ाया है। सेंतमेंत दिया है। इस

प्रकार कि उसने अपने एकमात्र और अद्वितीय पुत्र को संसार में भेजा। उसके मनुष्य बनने से हम मनुष्यों को जीवन मिला है। वह इसे हमारे पास लाया, हम जो मृत्यु और अन्धकार के देश में थे।

यह प्रेम पूरी तरह अनर्जित है। यह उस प्रेम का उत्तर नहीं था जो हम परमेश्वर से करते। हम में कुछ भी अच्छा नहीं था जिसने परमेश्वर को प्रेरित किया हो। थे तो हमारे अनगिनत पाप। जिनसे हम छूट नहीं सकते थे। उन्हीं को वह दूर करना चाहता था। **इस प्रकार उसने पहले हम से प्रेम किया और अपने पुत्र को भेजा, ताकि उसके बलिदान के द्वारा हमारे पाप दूर कर दिए जाएँ। भेजा, ताकि हम तक की अनन्त दूरी को पाट दे। अपने पुत्र को, हमारे पापों के प्रायश्चित्त के रूप में। ताकि उनको उसकी मृत्यु में नष्ट कर दे। क्रूस मानो परमेश्वर के प्रेम का केंद्रीय पिघलाव (कोर-मेल्टडाउन) है।**

प्रिय मित्रो, जब हम से इस प्रकार सारी अपेक्षाओं से बढ़कर, बिना योग्यता के, प्रेम किया गया, तो हम एक दूसरे से प्रेम करने के लिए मानो बाध्य हैं। जब हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, तब परमेश्वर हम में बना रहता है। तब उसका अतुलनीय प्रेम हम में जीवित है। वह हम में जलता है। हम में अपने लक्ष्य तक पहुँच गया है। परमेश्वर आत्मा है और किसी ने, किसी मनुष्य ने, उसे कभी नहीं देखा। **पर आज उसकी कुछ झलक देखी और समझी जा सकती है, उसे आँखों से देखे बिना! उस प्रेम के द्वारा, जिससे परमेश्वर का परिवार आपस में प्रेम करता है। इस प्रेम में परमेश्वर उपस्थित है।**

हम कैसे समझ सकते हैं कि हम उसमें हैं? और वह हम में? उसके आत्मा के द्वारा हम इसे समझ सकते हैं। उसके आत्मा के द्वारा ही यह जीवित और उसमें जड़ पकड़ी हुई प्रेम की सहभागिता संभव है।

हम प्रेरितों और यीशु के चेलों ने देखा है और तुम्हें गवाही देते हैं: पिता ने सचमुच हमारी खोई हुई दशा को देखा। हमारी बेबसी को। और अपने पुत्र को भेजा। सारे संसार के उद्धारकर्ता के रूप में। सब मनुष्यों के लिए पिता ने अपने पुत्र को भेजा।

जो विश्वास करता है और मान लेता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, उसकी परमेश्वर के साथ सहभागिता है और वह उससे जुड़ा हुआ है। हमने जान लिया है और विश्वास किया है कि परमेश्वर हम से कितना बड़ा प्रेम करता है। **क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। उसका पूरा स्वभाव सबसे शुद्ध, स्वयं को लुटा देने वाला प्रेम है। उसे प्रेम करना प्रिय है। किसी भी देवता ने कभी स्वयं को ऐसे प्रकट नहीं किया। यही उसकी संपूर्ण पहचान है। वह जो कुछ करता है और जो कुछ है, सब प्रेम से आता है।** जो इस प्रेम में जीता है, वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उसमें – यह इस बात से पहचाना जाता है कि हम हृदय से पिता के आभारी हैं और पड़ोसी से प्रेम करते हैं।

परमेश्वर का प्रेम और न्याय का दिन 4:17–19

परमेश्वर के प्रेम ने हमें पूरी तरह बदल दिया है। हमें परमेश्वर के सामने हियाव और भरोसा दिया गया है। इसलिए न्याय के दिन से, जब सब को पवित्र और धर्मी परमेश्वर के सामने लेखा देना होगा, हम नहीं डरते। तब जो बात गिनी जाएगी और टिकी रहेगी, वह केवल यह तथ्य है कि हम संसार में वैसे जिए जैसे यीशु

जिया। यह तब सच होता है जब हम उसके वचन पर चलते हैं; जो परमेश्वर से जन्मे सब लोगों के लिए स्वाभाविक है। चाहे यह कभी सौ प्रतिशत सफल न हो। पर इस कारण भी, इस कमी के कारण और हमारे जीवन के पापों के कारण भी, हमें डरने की आवश्यकता नहीं। **परमेश्वर से डर कभी परमेश्वर के प्रेम के स्वभाव में नहीं है। इसके विपरीत, परमेश्वर का सिद्ध प्रेम न्याय के दिन के डर को निकाल देता है। और असफलता के डर को भी, कि हम यीशु की तरह नहीं जी पाते।** डर तो स्वयं एक प्रकार का दंड है, जो निराशा तक ले जा सकता है। जो अब भी परमेश्वर और उसके न्याय से डरता है, वह अभी भरोसा नहीं करता। वह अभी परमेश्वर के प्रेम और यीशु की क्षमा के द्वारा विश्राम में नहीं आया है।

प्रेम करने के लिए परमेश्वर से जन्मे 4:20–5:3

हम परमेश्वर से और पड़ोसी से प्रेम करते हैं। क्योंकि पहले उसने हम से प्रेम किया। यह महत्वपूर्ण है, इसे कभी मत भूलना: यदि कोई दावा करता है कि वह परमेश्वर से प्रेम करता है, पर अपने पड़ोसी से घृणा करता है, तो वह झूठा है। जो अपने भाई से, जिसे वह अपनी आँखों से देख सकता है, प्रेम नहीं करता, वह परमेश्वर से, जिसे वह देख नहीं सकता, कैसे प्रेम कर सकता है? हमें परमेश्वर से यह आज्ञा मिली है कि जो उससे प्रेम करता है, वह स्वाभाविक रूप से अपने पड़ोसी से भी प्रेम करे। परमेश्वर से प्रेम दिखाई देने वाले संसार में प्रकट होता है। वहीं, न कि विचारों के अदृश्य सिद्धांत में, उसे स्वयं को प्रमाणित करना होता है।

जो कोई विश्वास करता है और मान लेता है कि यीशु मसीहा है, अर्थात् ख्रीस्त, वह परमेश्वर की सन्तान है। परमेश्वर से जन्मा। पिता और उसकी सन्तान एक परिवार की तरह प्रेम में बँधे हैं। जो कोई परमेश्वर से प्रेम करता है, वह स्वाभाविक रूप से उससे भी प्रेम करता है जो उससे जन्मा है। आख़िर वे भाई-बहन हैं! हम किस बात से देख सकते हैं कि हम परमेश्वर की सन्तान से प्रेम करते हैं? इस बात से कि हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके वचन और उसकी आज्ञाओं पर चलते हैं।

हम में, परमेश्वर की सन्तान में, परमेश्वर का प्रेम ही काम करने की शक्ति, प्रेरणा और कृतज्ञता है। उसकी आज्ञाओं को जानने और उन पर चलने की। जिनके पास परमेश्वर से मिला जीवन है, उनके लिए वे कठिन नहीं हैं। परमेश्वर का प्रेम ईंधन जैसा है। जो कभी समाप्त नहीं होता और उनमें जलता रहता है। परमेश्वर की आज्ञाओं पर वे ख़ुशी से चलते हैं।

विश्वास के द्वारा संसार पर विजय 5:4–5

क्योंकि जो परमेश्वर से जन्मा है, वह संसार पर जय पाता है। संसार, जो परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं को ठुकराता है, हमारे हृदय को भी जीत लेना चाहता है। ताकि हम उसके अनुसार ढल जाएँ। साथ चलें। उसके जैसे बन जाएँ। पर हम दृढ़ता से और विजयी होकर सामना करते हैं। यीशु के साथ बने रहते हैं। पिता, पुत्र और आत्मा पर हमारा भरोसा ही संसार पर विजय है। विश्वास के द्वारा हम इसे थामे रहते हैं। परमेश्वर से दूर संसार पर कौन जय पा सकता है और हम पर उसके अधिकार-दावे को कौन ठुकरा सकता है? केवल वे, जो

विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। यह विश्वास हमें बदलता है और जीवन के वचन से जोड़ता है। संसार और झूठे भविष्यद्वक्ता इस पर विश्वास नहीं करते। हम करते हैं और इसी पर बने रहते हैं।

हम किस मसीह पर विश्वास करते हैं 5:6–10

यीशु मसीह हमारे लिए आया। वह पूरी तरह मनुष्य बना। झूठे शिक्षक दावा करते हैं कि बपतिस्मे के समय "ईश्वरीय मसीह" नासरत के मनुष्य यीशु पर उतरा। और उसकी मृत्यु से कुछ ही पहले उसने उसे फिर छोड़ दिया। पर यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, ने यूहन्ना से पानी में बपतिस्मा लिया। उसने इस पर ज़ोर दिया। उसने स्वयं अपने को मार डाले जाने दिया। क्रूस पर कीलों से ठोके जाने दिया। अपने बहाए हुए लहू के द्वारा उसने हमें पापों से शुद्ध किया। सत्य का पवित्र आत्मा आरंभ से तुम्हें इसकी गवाही देता आया है। हाँ, जैसा मूसा की व्यवस्था माँगती है, मैं तुम्हें दो या तीन गवाह बता सकता हूँ: पानी, लहू और आत्मा। वे एक स्वर से पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर का पुत्र पूरी तरह मनुष्य बना। वह खुलेआम सामने आया और मनुष्यों की सेवा करने लगा। यह पानी में उसके बपतिस्मे से आरंभ हुआ। और वही, परमेश्वर का पुत्र, गुलगुता पर मरा। मनुष्य कुछ भी दावा कर सकते हैं, पर परमेश्वर की गवाही बड़ी है और बड़ी ही रहती है। इसलिए वह भरोसेमंद है। अंतिम निर्णायक। परमेश्वर ने मसीह के विषय में ठीक वही गवाही दी है, जो तीनों गवाहों ने दी है। वे एक स्वर से मसीह के जीवन का वर्णन करते हैं: आत्मा, पानी और लहू। जो इस मसीह पर विश्वास करता है, वह इस एक-स्वर गवाही को अपने हृदय में रखता और सँभालता है। जो परमेश्वर की उसके पुत्र के विषय में गवाही को ठुकराता है, वह परमेश्वर को झूठा ठहराता है।

केवल इसी मसीह पर विश्वास अनन्त जीवन देता है 5:11–13

परमेश्वर पुत्र के विषय में जो गवाही देता है, वह सच्ची और विश्वसनीय है। वह हमसे बिलकुल ठोस रूप में जुड़ी है। उसने हमें अनन्त जीवन दिया है! यह जीवन और किसी में नहीं, केवल उसके पुत्र में है। यीशु मसीह में, जो मनुष्य बना, हमारे लिए मरा और जी उठा। और जिसने विश्वास से, भरोसे के साथ, पुत्र को अपने हृदय और जीवन में ग्रहण किया है, उसके पास अनन्त जीवन है। वह उसका नया अस्तित्व बन गया है। पुत्र के साथ, जो जीवन है, उसे परमेश्वर की सन्तान के रूप में एक नया अस्तित्व मिला। जिसने पुत्र को ग्रहण नहीं किया, उसके पास कभी अनन्त जीवन नहीं हो सकता।

यह मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम एक ही बार सदा के लिए जान लो – अर्थात् केवल डरते-डरते या डगमगाते हुए आशा या अनुभव न करो – और संदेह भी न करो, कि अनन्त जीवन तुम्हारे पास है। किसी ऐसी चीज़ के रूप में नहीं, जिसे खोया जा सकता है। अनन्त जीवन की तुलना तुम्हारे प्राण से की जा सकती है, जो तुम्हारा सांसारिक जीवन है। उसी प्रकार परमेश्वर का अनन्त जीवन तुम्हारा जीवन है और परमेश्वर की सन्तान के रूप में तुम्हारा अविनाशी अस्तित्व। तुम परमेश्वर की सन्तान हो, जिनके पास परमेश्वर का जीवन है।

शर्त यह है कि तुम परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हो। उसके नाम पर, जिसमें इतना कुछ समाया है और जो इतनी बातों का प्रतीक है कि वह कौन है और कौन था: वह अनन्त है। वह मनुष्य बना। वह हमारे लिए मरा। जिलाया गया। महिमा में उठा लिया गया। जहाँ से वह लौटकर आएगा। यह सब और इससे भी अधिक यीशु के उस नाम में समाया है, जिस पर तुम विश्वास करते हो।

प्रार्थना जिसका उत्तर मिलता है 5:14–15

परमेश्वर, हमारे पिता, के विषय में मैंने तुम्हें जो कुछ लिखा है, वह सब हमें उसके सामने रहने का निमंत्रण देता है। हम हमेशा उसकी ओर खिंचे चले जाते हैं। उस पर खुला भरोसा रख सकते हैं। **बच्चों जैसे भरोसे और निश्चिंत आशा से भरकर उसके सामने आ सकते हैं। विश्वास में, मानो वह केवल एक कदम दूर हो।** उसके दयालु मुख के सामने। विशेषकर तब, जब हम उससे कुछ माँगते हैं। वह हमारी सुनता है और उत्तर देता है। हम तो वही माँगते हैं जो वह चाहता है। क्योंकि हम उसे और उसकी इच्छा को जानते हैं – वह जो उसे अच्छा लगता है। हम उससे सचमुच सब कुछ माँग सकते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि वह हमारी सुनेगा। जब परमेश्वर माँगी हुई बात पूरी करता है, तब हम जानते हैं कि यह विनती का उत्तर है। परमेश्वर का भला उत्तर। वह कोई विनती नहीं भूलता और ठीक समय पर उत्तर देता है। तब भी, जब हमारी मध्यस्थता की प्रार्थना को बहुत समय बीत चुका हो और हम उसे भूल गए हों।

पाप और मृत्यु, संसार और बुराई, वह जो सत्य है 5:16–21

परमेश्वर की सन्तान एक प्रार्थना करने वाला परिवार है। विशेष रूप से तब, जब परिवार का कोई सदस्य खुलेआम और लगातार परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध काम करता है। यह गंभीर बात है। इसलिए उस भाई या बहन को हमारी प्रार्थना की आवश्यकता है, ताकि वे पाप को पहचानें, उसे मान लें और छोड़ दें। ऐसी स्थिति में हमारी प्रार्थनाएँ नितांत आवश्यक हैं। क्योंकि यदि परमेश्वर हमारी सुनता है, तो वे उस भाई या बहन को जीवन देंगी। इस प्रकार वह भाई या बहन वैसे लौट आता है जैसे परमेश्वर चाहता है: पिता और पुत्र के साथ सचेत और जी जाने वाली सहभागिता में। और परमेश्वर के परिवार की एकता में।

ऐसा पाप भी है जो मृत्यु की ओर ले जाता है। कोई भाई या बहन, परमेश्वर की सन्तान, ऐसा पाप नहीं कर सकते। यह पाप झूठे भविष्यद्वक्ताओं की और उस सारे संसार की पहचान है, जो मृत्यु में पड़ा है। हर अधर्म पाप है। चाहे उसे परमेश्वर की सन्तान करे या कोई झूठा भविष्यद्वक्ता। पर परमेश्वर की सन्तान के पाप का अर्थ उसकी मृत्यु नहीं है। पर संसार का पाप – वह अनन्त विनाश की ओर ले जाता है। क्योंकि संसार मसीह को और पाप के लिए उसके बलिदान को ठुकराता है।

जो परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर की सन्तान बना है, वह लगातार पाप नहीं करता। निरंतर जानबूझकर और आनंद लेते हुए नहीं। इसलिए परमेश्वर की सन्तान का पाप मृत्यु की ओर ले जाने वाला पाप नहीं है। वह ऐसा हो भी नहीं सकता। अपनी पत्री में मैंने सत्य को स्पष्ट विरोधाभासों में तीखा करके रखा है। काले और सफ़ेद के अंतर में समझाया है। जो परमेश्वर से जन्मा है, वह पाप नहीं करता, क्योंकि

मसीह उसकी रक्षा करता है और उसे थामे रहता है। मसीह हमेशा अधिक बलवान है। वह उस दुष्ट पर विजयी है। इसलिए वह दुष्ट परमेश्वर से जन्मे हुए को न छू सकता है, न नष्ट कर सकता है।

हम निश्चय से जानते हैं कि परमेश्वर ने हमें नया जन्म दिया है। इसके विपरीत, जो लोग परमेश्वर को ठुकराते हैं, वे उस दुष्ट, शैतान, के पक्ष में हैं। वे मृत्यु में हैं। यह अंतर, बल्कि यह विरोध, हमारे अपने कारण नहीं आया। यह यीशु के द्वारा हुआ है। परमेश्वर के अनन्त पुत्र का मिशन यह था कि हमें परमेश्वर को दिखाए – उसका पवित्र स्वभाव, उसकी ज्योति और उसका प्रेम। और हम पर प्रकट करे कि उसे हमारे लिए क्यों आना पड़ा। विश्वास करने वाले के लिए यह जीवन-मरण का प्रश्न है कि वह मसीह को, जो सत्य है, पहचाने। क्योंकि वह संसार के सब देवताओं और मूर्तियों से भिन्न है। जिस यीशु का हम तुम्हें प्रचार करते हैं, उसी पर सब कुछ टिका है। उसके साथ हम सदा के लिए अटूट रूप से जुड़े हैं। हम उसमें हैं। उसमें जो सत्य है। सुरक्षित। उसके पास घर में, चाहे हम अपने सांसारिक अस्तित्व में कहीं भी हों।

और मैं इसे एक बार फिर जितना हो सके उतना स्पष्ट कहता हूँ: **वही सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन है। नासरत का निर्माण-कारीगर परमेश्वर है। वह अवर्णनीय, वह अगम्य, वह सनातन, जो सदा से था, वह सृष्टिकर्ता। वही वह जीवन है जो अब हमारे पास है। वही, जिसमें हम जीते हैं।**

परमेश्वर के पुत्र के विषय में इस सत्य को देखते हुए मैं अपनी पत्री के अंत में बस इतना ही ज़ोर देकर कह सकता हूँ: **जो कुछ भी यीशु मसीह और उसकी महिमा को छोटा करता है, कमज़ोर करता है या उस पर प्रश्न उठाता है – वह मूर्तियाँ हैं और मूर्तियाँ ही रहेंगी।** मेरे मित्रो, सावधान रहो कि तुम किसी भी रूप में न तो दिखाई देने वाली मूर्तियों को सहन करो या सराहो, और न "भीतरी" मूर्तियों को, जैसे मनुष्यों से मिलने वाला सम्मान या धन, जिससे हम चिपके रहते हैं।

यूहन्ना की दूसरी पत्री

तुम्हें यूहन्ना, प्राचीन, लिख रहा है। एक ऐसा व्यक्ति, जो चरवाहे के रूप में तुम्हारी चिंता करता है। तुम्हें, उस चुनी हुई स्त्री और उसकी सन्तान को। तुम्हें, विश्वासियों की एक छोटी-सी संगति को, जिससे मैं हृदय से प्रेम करता हूँ। मेरा अभिप्राय उस प्रेम से है जो परमेश्वर के सत्य से आता है। पर यीशु मसीह से भी। वे सब जिन्होंने यीशु मसीह को सत्य के रूप में पहचाना है और उससे प्रेम करते हैं, तुम से भी प्रेम करते हैं। सत्य, जो यीशु है, इस प्रेम का आधार, दिशा और मापदंड है! सत्य हम में बना रहेगा, क्योंकि यीशु मसीह हम में है। सदा-सर्वदा! सब विश्वासी सदा के लिए परमेश्वर के प्रेम की सहभागिता में रहेंगे। अनन्त जीवन में।

परमेश्वर का अनुग्रह, उसकी दया और उसकी शान्ति हमारे साथ रहेंगी। तुम में से हर एक के साथ – दिन-प्रतिदिन। स्वर्ग में रहने वाले हमारे पिता परमेश्वर की ओर से दी हुई। वैसे ही पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से भी। वह भी परमेश्वर है। परमेश्वर पुत्र। जो मनुष्य बना और जिसने हम मनुष्यों पर परमेश्वर का सत्य और प्रेम प्रकट किया। इसी सत्य और प्रेम में हम परमेश्वर की सन्तान के रूप में जीते हैं!

मैं बहुत आनंदित हुआ, जब मैंने तुम्हारी कुछ सन्तानों को सत्य में जीते देखा। वे पिता की उस आज्ञा को पूरा करते हैं, जो यीशु हमारे लिए लाया। **इसलिए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि वही करो जो हमने आरंभ से सुना है। कोई नई आज्ञा नहीं, जो तुम्हें चकित करे, बल्कि वही पुरानी: कि हम एक दूसरे से प्रेम करें।**

पिता के प्रेम में बने रहने और जीने का अर्थ है उसकी आज्ञाओं को मानना: उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करना और एक दूसरे से प्रेम करना। उसकी आज्ञाएँ हमारे प्रति उसके प्रेम की अभिव्यक्ति हैं। उनका काम रक्षा करना भी है। इधर-उधर घूमने वाले झूठे शिक्षकों से। आज बहुत-से भटकाने वाले बड़े प्रचार-उत्साह के साथ अपने झूठ फैलाने निकले हैं। वे खुलकर कहते और प्रचार करते हैं कि यीशु देह में होकर नहीं आया। **वे इनकार करते हैं कि परमेश्वर पुत्र पूरी तरह मनुष्य बना – जैसे हम हैं: बैतलहम में जन्मा। नासरत में पला-बढ़ा। बहुत वर्षों तक निर्माण-कारीगर के रूप में काम करता रहा। यरूशलेम के फाटकों के बाहर क्रूस पर मरा। हमारे पापों के प्रायश्चित्त के लिए। सचमुच देह के साथ जी उठा। और मनुष्य के रूप में स्वर्ग में उठा लिया गया। जो इन तथ्यों का आंशिक या पूरा इनकार करता है, वह भटकाने वाला है और आने वाले मसीह-विरोधी का साथी है।**

ये भटकाने वाले एक वास्तविक ख़तरा हैं। इसलिए अपने विषय में चौकस रहो। सावधान रहो! ताकि जो हमने परिश्रम से पाया है, उसे हम खो न दें। तुम हमारे मिशन-कार्य का फल हो! तुमने स्वयं अनन्त जीवन के लिए काम किया है। परमेश्वर का काम किया है और अनन्त जीवन के लिए उसके नाम पर विश्वास किया है।

हम तो वह पूरा प्रतिफल पाना चाहते हैं जिसकी हमसे प्रतिज्ञा की गई है। वह केवल तभी मिलता है, जब हम सत्य को थामे रहें, उसमें जिएँ और उससे आगे न बढ़ें जो मसीह के विषय में आरंभ से प्रकट किया गया है।

जो कोई मसीह की शिक्षा में, जैसी तुमने आरंभ से सुनी है, बना नहीं रहता, ऐसे व्यक्ति में परमेश्वर वास नहीं करता। जो कोई मसीह के विषय में, परमेश्वर के उस पुत्र के विषय में जो मनुष्य बना, शिक्षा में बना रहता है, वह पिता और पुत्र से जुड़ा है। वे उसमें वास करते हैं।

यदि कोई तुम्हारे पास आए और मसीह के विषय में वह शिक्षा न लाए, जैसी मैंने तुम्हें आरंभ से समझाई है, तो उसे ग्रहण मत करो। उसे बोलने का अवसर ही मत दो। उसे वैसे नमस्कार और स्वागत मत करो, जैसे तुम किसी स्वागत-योग्य अतिथि को अपनाते हो। क्योंकि जो ऐसे व्यक्ति का फिर भी इस अतिथि-सत्कार की रीति से स्वागत करता है, वह उसके बुरे कामों में भागी होता है। चाहे वह चाहे या न चाहे। यदि कोई यात्री शिक्षक तुम्हारे पास आए, जिसके विषय में तुम नहीं जानते कि वह मसीह के विषय में सत्य बोलता है या नहीं, तो पहले यह स्पष्ट कर लो। जब यह स्पष्ट हो जाए, तब उसे ग्रहण करो। **जब हमारे प्रभु यीशु मसीह की बात हो, तो हमेशा स्पष्ट पक्ष लो। यहाँ कभी तटस्थता या उदासीनता नहीं होनी चाहिए। नहीं तो हमारा सारा प्रतिफल दाँव पर लग जाता है।**

मुझे अभी बहुत कुछ और लिखना चाहिए। स्याही और काग़ज़ से। पर कहीं अच्छा और सुंदर यह है कि वहीं आकर तुमसे बात करूँ। क्योंकि ऐसी सहभागिता में, जहाँ हम आमने-सामने बात करते हैं, हमेशा बड़ा आनंद होता है।

यहाँ से भी, यहाँ के उन विश्वासियों की ओर से, जिनके बीच मेरा घर है, हार्दिक नमस्कार।

यूहन्ना की तीसरी पत्री

मैं, यूहन्ना, प्राचीन, प्रेस्बिटर, तुम्हें लिखता हूँ, मेरे प्रिय गयुस, जिससे मैं सत्य में प्रेम करता हूँ। उस सत्य में, जो यीशु मसीह के द्वारा हम तक आया और जिसने हमारे हृदयों को जीत लिया, ताकि हम अब से परमेश्वर के प्रेम में जिएँ।

प्रिय गयुस, मैं कितनी इच्छा रखता हूँ, और इसके लिए प्रार्थना करता हूँ, कि तुम सब बातों में कुशल से रहो। तुम्हारे बाहरी मनुष्यत्व में भी और भीतरी में भी। कि तुम्हारा मार्ग अच्छा और समतल हो।

मैं कितना आनंदित हुआ कि जो भाई तुमसे मिले, उन्होंने बताया कि तुम अपने जीवन को कितनी लगन से सत्य के अनुसार ढालते हो। मुझे आनंद है कि तुम्हारे हृदय में सत्य के फल सब को दिखाई देते हैं। मेरे लिए इससे बड़ा कोई आनंद नहीं कि मैं देखूँ कि मेरी सन्तान सत्य में जीती है। वे, जिन्हें मसीह तक, जो सत्य है, पहुँचाने का सौभाग्य मुझे मिला और जो अब उससे भरे हुए हैं। जो सत्य को प्रेम में थामे भी रहते हैं और अपने विश्वासी भाई-बहनों और अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं।

प्रिय, तुमने भाइयों के साथ जैसा व्यवहार किया है, वह सत्य के प्रति विश्वासयोग्यता है। ऐसे पुरुषों के साथ, जिन्हें तुम जानते भी नहीं। उन्होंने यहाँ हमारे पास घर की कलीसिया में अतिथि-सत्कार में तुम्हारी विश्वासयोग्यता की गवाही दी और उसका आनंद मनाया। जब ऐसे भाई मिशनरियों के रूप में यात्रा पर हों, तो आगे की यात्रा के लिए उन्हें आवश्यक सामग्री देकर विदा करो। यह परमेश्वर को अच्छा लगता है और उसका आदर करता है। वे उसी की सेवा करते हैं। इस प्रकार उनकी सेवा को सहारा मिलता है। क्योंकि वे अपने लिए यात्रा नहीं करते। हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिए वे निकले हैं। उसका प्रचार करने के लिए। इसमें वे अन्यजातियों के सहारे पर निर्भर नहीं रहते, बल्कि हमेशा वहाँ के अपने संगी विश्वासियों को ढूँढ़ते हैं। उन पर यह दायित्व है, बल्कि यह उनका कर्तव्य है कि उन्हें ग्रहण करें। पर भटकाने वालों को अपने घरों में मत ठहराओ। केवल सच्चे मिशनरियों को। **इस प्रकार हम सत्य के सहकर्मी बनते हैं और प्रभु के काम में सक्रिय भागीदार हैं। उसके राज्य में।**

प्रिय गयुस, जिस घर की कलीसिया के तुम सदस्य हो, उसे मैंने लिखा है। ताकि इन भाइयों को ग्रहण किया जाए। पर दियुत्रिफेस हमारी बात को गंभीरता से नहीं लेता। उसे उनके बीच प्रधान बनना प्रिय है। और मनमाने ढंग से निर्णय लेना।

जब मैं तुम्हारे पास आऊँगा, तो उसे उसके इस ठुकराने वाले रवैये की याद दिलाऊँगा और उससे जवाब माँगूँगा। इसे हर हाल में सुलझाना होगा। क्योंकि वह बिना कारण बुरी बातें कहकर हम पर दोष लगाता है। वह केवल बातों से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि उन भाइयों को, जो हम सब की सेवा करते हैं और ठहरने का

स्थान ढूँढ़ते हैं, सीधे लौटा देता है। और जो उन्हें ठहराना चाहते हैं, उन्हें रोकता है। वह उन्हें घर की कलीसिया से निकाल देने की धमकी तक देता है। यह ऐसा व्यवहार है जो विश्वासियों की सहभागिता में शोभा नहीं देता।

प्रिय गयुस, ऐसे व्यवहार से उकसकर स्वयं भी वैसा ही मत करना। **बुराई का नहीं, बल्कि भलाई का अनुकरण करो।** एक सरल और स्पष्ट नियम है: जो भलाई करता है, वह परमेश्वर से है। क्योंकि परमेश्वर भला है। जो बुराई करता है, उसने परमेश्वर को नहीं देखा। वह अनदेखा करता है कि परमेश्वर कैसा है। वह अनदेखा करता है कि परमेश्वर हमें ग्रहण करता है और हमें एक दूसरे को ग्रहण करना चाहिए।

देमेत्रियुस इन लौटाए गए लोगों में से एक है। यद्यपि इस पत्र को पहुँचाने वाले के रूप में सब उसके विषय में अच्छी गवाही देते हैं। उसे ग्रहण करने में कोई बाधा नहीं। उसके लिए सत्य सबसे पहले है। वह उसके पक्ष में खड़ा होता है। वह उसके अनुरूप जीता है। हम भी इसकी गवाही देते हैं। और तुम भली-भाँति जानते हो कि हम सच कहते हैं।

लिखने को अभी बहुत कुछ और है। पर आमने-सामने बात करना और विश्वासियों की सहभागिता में विचारों का आदान-प्रदान करना अधिक अच्छा है।

परमेश्वर की शान्ति तुम्हारे साथ हो। यहाँ के मित्र तुम्हें नमस्कार कहते हैं। हमारी ओर से उन सब मित्रों को, जो तुम्हारे जैसा मन रखते हैं, व्यक्तिगत रूप से नमस्कार कहना। एक-एक को।

अंत में

मुझे पूरी आशा है कि पढ़ते समय आपने अनुभव किया होगा कि परमेश्वर आपसे कैसे बात करता है। वह कैसे उत्साह देता है, सिखाता है, पर हर उस बात से सावधान भी करता है जो उसकी ओर से नहीं आती और इसलिए हमें हानि पहुँचाती है।

जो भी भली बातें उसने आपके विषय में और सीधे आपसे कही हैं, उन सब के लिए उसका धन्यवाद कीजिए।

यदि आपके कोई प्रश्न हों, तो मुझे लिखिए: hj-ronsdorf@t-online.de

नए नियम के और पाठ आपको www.hans-joerg-ronsdorf.de पर मिलेंगे।

यहाँ कुछ और महत्वपूर्ण सुझाव हैं:

बाइबल पढ़िए। हो सके तो नियमित रूप से।

दूसरे लोगों के साथ मिलकर बाइबल पढ़िए – और उस पर आपस में बातचीत कीजिए।

प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर अपने वचन को आपके लिए जीवित कर दे – ऐसे, मानो वह सीधे आपसे बात कर रहा हो।

पाठ को ऊँचे स्वर में और लगातार दो बार पढ़िए।

पाठ से ये प्रश्न पूछिए:

आप इस पाठ को कौन-सा शीर्षक देंगे?

यह पाठ परमेश्वर और यीशु के विषय में क्या कहता है?

यह पाठ मनुष्यों के विषय में क्या कहता है?

हम इस पाठ से क्या सीखते हैं?

हमें क्या करना चाहिए?

यह वचन हमें कैसे उत्साह देता है?

जब आप फिर मिलें, तो अपने अनुभवों और घटनाओं के विषय में बात कीजिए।

ऐसे मसीहियों से संपर्क और सहभागिता खोजिए, जो यीशु मसीह से प्रेम करते और उसका आदर करते हैं, और बाइबल को मूल्यवान मानते, पढ़ते और गंभीरता से लेते हैं।